

‘ज्योति कलश छलके...५०’

‘ज्योति कलश छलके...५०’ यह संदेश ‘फेसबुक’ की दीवारों पर चमकने लगा .तुरंत सैंकड़ों पोस्टिंग्स एवं लिंक्स गानसेन तथा कानसेनों की सेवा में हाजिर हो गए .सायबर विश्व की अलिबाबावाली गुंफा में .खुल जा सिमसिम .‘अनमोल फनकार’ इस वेबसाइट पर ‘ज्योति कलश छलके’ इस गीत के गीतकार पंडित नरेंद्र शर्मा जी की पूरी जानकारी एक जगह .

[<http://www.anmolfankaar.com/specials/ek-fankaar/175-pandit-narendra-sharma>]

अमीन सायानी जी ने १९८४ में आकाशवाणी के विविध भारती केंद्र के प्रसारण के लिए रिकार्ड की हुई एक मुलाकात .हिंदी में .सुनने में बिल्कुल साफ और सुस्पष्ट .मानो अभी इसी समय प्रसारित हो रही हो .पंडित जी की आवाज सुनकर लगता कि अपने ही घर में दादाजी या नानाजी गोदी में बिठाकर बड़ी रसीली कहानियाँ सुना रहे हैं .सुनते सुनते ना जाने आँखें कब भर आएंगी .फिर लताजी आपको ‘पापा’ संबोधित करती है तो पंडित जी उन्हें ‘बेटी’ .आपके गीतों के भावपूर्ण लेकिन सीधेसाधे शब्द .लताजी की सुमधुर आवाज और बाबूजी सुधीर फडके जी का श्रुतीमधुर संगीत .एक के बाद एक दुर्लभ गाने .उसी पल में नीचे वीडियो गानों का विभाग .‘यू ट्यूब’ की कृपा से .सबसे ऊपर ‘ज्योति कलश छलके’ .१९८५ के आसपास का ध्वनिचित्रमुद्रण .रंगीन दूरदर्शन के जमाने का .खुद बाबूजी गीत के भाव से एक रूप होकर गा रहे हैं .चार मिनट और सैंतालिस सेकंड चलने वाली वीडियो क्लिप .उसमें ४ .१३ मिनट पर ऋषीतुल्य पं .नरेंद्र शर्मा जी का प्रसन्न दर्शन .

और एक संकेतस्थल पर ‘भाभी की चुड़ियाँ’ (१९६१) सिनेमा के इसी गाने की वीडियो .ब्लॉक अँड व्हाईट .वो भी ठीक चार मिनट और सैंतालिस सेकंड की .मीना कुमारी (भाभी) और मास्टर अजीझ (छोटा देवर) पर चित्रित .सुबह का समय .मंदिर के शिखर की पार्श्वभूमि पर उड़ने वाले पंछियों की कतारें .घर का दरवाजा खोलकर भाभीजी आँगन में .सूरजदेव को अभिवादन .बैकग्राउंड पर भूपाली राग में लताजी की आवाज में पंद्रह सेकंड की बड़ी ही मुश्किल तान .आज पचास साल के बाद भी सुनते ही रोंगटे खड़े कर देने वाली .सुबह के काम की शुरुवात .लता मंगेशकर जी की आवाज में गाना - ‘ज्योति कलश छलके’ .आँगन की सफाई , रंग बिरंगी सोली , तुलसी के पौधे की पूजा और तुलसी वृंदावन की परिक्रमा , गोपाल जी के मूर्ती की पूजा .फिर चूल्हे की आराधना .इसमें छोटे देवर की मदद .बिना वजह आसपास घूमकर काम में दखल अंदाजी और नटखट शरारतें .ऐसी की किसी को भी अपना बचपन याद आए .परदे पर चित्र और कानों में एक के बाद एक गाने के अंतरे .लग रहा है कि ये गाना पूरा ही ना हो .नन्हे देवर और बड़ी भाभी के पवित्र एवं निर्मल प्रेम का अनूठा

आविष्कार .देखनेवालोंके आँखोंमें आँसू.गानेके आखिरमें ‘भाभीही मेरी माँ’ यह भावना प्रकट करनेवाला बड़ा भावपूर्ण प्रसंग .बार बार देखनेको मन करनेवाला .

फिल्मका सीन अगर आँखोंके सामने ना हो और सिर्फ गानाही सुननेको मिले, तो भी वही प्रभाव .मूल कहानी मराठीके जाने माने कथाकार श्री .य .गो .जोशीजीकी .इसपर मराठी फिल्म बनी थी १९५३ में .‘वहिर्नीच्या बांगड्या’ नामसे .मराठी एवं हिंदीमें आठ आठ गाने .अनुक्रमसे श्री .शांताराम आठवले और पं .नरेंद्र शर्माजीके लिखे .दोनों जगह संगीत सुधीर फडकेजीका .मराठी गाने तो अतीतमें चले गए .सुन पाना भी मुश्किल .हिंदीके आठमेंसे तीन गाने खूब चले - ‘लौ लगाती, गीत गाती’, ‘मेरी लाज राखो गिरीधारी’ और ‘ज्योति कलश छलके’ .इनमेंभी आखिरी गानेसेही बाबूजीको हिंदी सिनेसंगीतके क्षेत्रमें खूब प्रशंसा मिली .यह गाना उस जमानेमें रेडियो सिलोनपर बजाते थे .लताजीने बाबूजीके संगीतमें कुल मिलाके ४६ गाने गाए हैं .उनमेंसे यह गाना सबसे बढ़िया और काफी लोकप्रिय .आज पचास सालोंके बाद भी .क्या कारन हो सकता है इसका?

इस बातकी चर्चाभी ‘इंटरनेट’पर जारी है .भारतीय संस्कृतिमें कलश और दीपकका काफी सम्मान होता है .पुरातन वेदकालसे .खास आकारका माटी या धातूका पात्र .गंगाजलसे या किसी पवित्र नदीके जलसे भरा हुआ .उपर आमके पाँच पत्ते .और सबसे उपर नारियल(श्रीफल) .यह मंगल कलश और साथमें दीपक .हर एक शुभ कार्य एवं अवसरपर जरूरी .कुछ संस्कृतिके लोग कलशमें मनुष्यको, पानीमें जीवनको, पाँच पत्तोंमें पंचेंद्रियोंको और श्रीफलमें मस्तिष्कको देखते हैं .निसर्ग एवं देवलोककी सभी सुष्ट शक्तियाँ इन प्रतीकोंमें समायी हुई मानते हैं .

ऐसे पवित्र कलशकोही कवीने नये रूपमें देखा है .सूर्यविंश और उसमेंसे निकलनेवाले प्रकाशसे बना ‘ज्योति-कलश’ .कलश ओर दीपक .दोनों प्रतीक एक साथ .शायद इसी कारन यह गीत अमर रहेगा .हमेशा .खास बात यह है कि आज पचास साल बाद इसकी याद की जा रही है जुलाई महिनेमें .बाबूजीका जनमदिन और अंतकालके महिनेमें .



ज्योति कलश छलके

ज्योति कलश छलके, ज्योति कलश छलके
हुए गुलाबी लाल सुनहरे, रंग दल बादलके
ज्योति कलश छलके...१

घर आंगन वन उपवन उपवन, करती ज्योति अमृतसे सिंचन
मंगल घट ढलके, मंगल घट ढलके
ज्योति कलश छलके...२

अंबर कुंकुम कण बरसाए, फूल पँखुडिया पर मुसकाए
बिंदू तू ही न जलके, बिंदू तू ही न जलके
ज्योति कलश छलके...३

पात पात बिरवा हरियाला, धरतीका मुख हुआ उजाला
सच सपने कलके, सच सपने कलके
ज्योति कलश छलके...४

उषा ने आँचल फैलाया, फैली सुखकी शीतल छाया
नीचे आँचलके, नीचे आँचलके
ज्योति कलश छलके...५

ज्योति यशोदा धरती गय्या, नील गगन गोपाल कन्हैया
श्यामल छवि झलके, श्यामल छवि झलके
ज्योति कलश छलके...६

सुरेश चांदवणकर, नेव्हीनगर, मुंबई . २० जुलै २०११
chandvankar.suresh@gmail.com. Cell - 9920813336



pdfMachine

Is a pdf writer that produces quality PDF files with ease!

Produce quality PDF files in seconds and preserve the integrity of your original documents. Compatible across nearly all Windows platforms, if you can print from a windows application you can use pdfMachine.

Get yours now!

ज्योति कलश छलके
हुए गुलाबी लाल सुनहरे
रंग दल बादल के
ज्योति कलश छलके।

घर आंगन बन उपवन उपवन
करती ज्योति अमृत से सिंचन
मंगल घट ढलके
ज्योति कलश छलके।

पात पात बिरबा हरियाला
धरती का मुख हुआ उजाला
सच सपने कल के
ज्योति कलश छलके।

ऊषा ने आंचल फैलाया
फैली सुख की शीतल छाया
नीचे आंचल के
ज्योति कलश छलके।

ज्याति यशोधरा धरती गैय्या
नील गगन गोपाल कन्हैया
श्यामल छवि झलके
ज्योति कलश छलके।



लता मंगेशकर

